RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 72 अंक : 47
सृष्टि संवत् 1960853116
21 फरवरी 2016
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726
जालन्धर

वर्ष–72, अंक : 47, 17/21 फरवरी 2016 तदनुसार 9 फाल्गुन सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

आततायी का वध

-ले० श्री स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

इन्द्र जहि पुमांसं यातुधानमुत स्त्रियं मायया शाशदानाम्।
विग्रीवासो मूरदेवा ऋदन्तु मा ते दृशन्त्सूर्यमुच्चरन्तम्।।

-अथर्व० ८।४।२४

शब्दार्थ-हे इन्द्र-अन्यायनाशक राजन्! **मायया**-चालाकी से **शाशदानाम्**-पीड़ा पहुंचाने वाले **यातुधानमुत**-आततायी **पुमांसम्+उत+स्त्रियम्**-पुरुष और स्त्री को **जहि**-मार दे। **मूरदेवाः**-हिंसा ही है आराध्य जिनका ऐसे **विग्रीवासः**-ग्रीवारहित होकर **ऋदन्तु**-नष्ट हों, **मा**-मत **ते**-वे **उच्चरन्तम्**-उदय होते **सूर्यम्**-सूर्य को **दृशन्**-देखें।

व्याख्या-इस मन्त्र में राजा को एक ऐसा आदेश है कि कदाचित् साधारण लोग जिसे जानकर कांप उठें, किन्तु राजा का काम है राज्य में शान्ति और व्यवस्था स्थापित करना तथा उसे स्थिर रखना। वह शान्ति नहीं, जिससे राज्य की श्री वृद्धि न होकर प्रतिदिन ह्रास होता जाए, शान्ति और व्यवस्था का परिणाम धन-धान्य की संवृद्धि, स्वास्थ्य की वृद्धि, कला और विज्ञान की प्रवृद्धि होना चाहिए। यह तभी हो सकता है जब राजा सब कार्य छोड़कर राजकार्यों को लगन से करें। तदनुयायी ऋषियों ने तो राजकार्य ही राजा का सन्ध्योपासना कर्म माना है। यथा-

"राजा सर्वदा राजकार्य में प्रवृत्त रहे, अर्थात् यही राजा का सन्ध्योपासनादि कर्म है जो रात-दिन राजकार्य में प्रवृत्त रहना और कोई राजकाम बिगड़ने न देना।" -सत्यार्थप्रकाश, षष्ठसमुल्लास

यदि राज्य में ऐसे लोग उत्पन्न हो जाएं जो लोगों के घरों को आग लगा दें, लोगों के सस्य जला दें, स्त्रियों और बालकादिकों को व्यर्थ ही पीड़ा दें और राजा उन्हें दण्ड न दे, तो सभी के प्राण संशय में रहने लग जाएं, सभी प्रकार के कार्य, व्यवहार, व्यापार बन्द हो जाए, खेती न हो सके, कला-कौशल, शिल्प आदि सभी नष्ट हो जाएं और सम्भव है कि कोई अन्य साहसी राजा आक्रमण करके राष्ट्र को पराधीन कर दे, अतः राजा का कार्य मुख्य कार्य ऐसे आततायी यातुधान लोगों का वध करके राज्य में शान्ति स्थापित करना है। अथर्ववेद (८।४।२१) में स्पष्ट कहा है-

इन्द्रो यातूनामभवत्पराशरो हविर्मथीनामभ्याविवासताम्।

राजा लोगों की जीवन-सामग्री के नाशक तथा लोगों को बेघर करने वाले यातुधानों-आततायियों का सर्वथा नाशक होता है।

आर्य धर्म में स्त्री को अवध्य माना है, किन्तु यदि वह यातुधान हो, आततायी हो तो राजा का कर्त्तव्य है कि उसे मार दे। यही वेद कहता है-

इन्द्र जहि पुमांसं यातुधानमुत स्त्रियं मायया शाशदानाम्।

हे राजन्! छल-कपट से हिंसा करने वाले आततायी पुरुष और स्त्री को मार दे। स्त्री तभी तक अवध्य है जब तक वह स्त्री मर्यादा का पालन करती है, जब वह आततायी हो जाती है तो अपनी अवध्यता खो बैठती है।

मनु महाराज ने इस मन्त्र का, मानो निम्न श्लोकों में आशय ही वर्णित किया है-

गुरुं वा बालवृद्धौ वा ब्राह्मणं वा बहुश्रुतम्।
आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन्।।८।३५०।।
नाततायिवधे दोषो हन्तुर्भवति कश्चन।
प्रकाशं वाप्रकाशं वा मन्युस्तं मन्युमृच्छति।।८।।३५१।।

चाहे गुरु हो, चाहे पुत्रादि बालक हों, चाहे पितादि वृद्ध और चाहे बहुत शास्त्र का श्रोता क्यों न हो, जो धर्म छोड़कर, अधर्मरत होकर, निरपराधियों की हत्यादि करने वाला आततायी है उसको बिना विचारे मार डाले, अर्थात् मारकर पीछे विचार करे।

आततायी को मारने में मारने वाले को पाप नहीं होता, चाहे प्रकट मारे चाहे गुप्त मारे। वह क्रोध का क्रोध को प्राप्त होना है।

वेद ऐसे आततायियों-यातुधानों के बहुत विरुद्ध है, अतः इनको विग्रीव-ग्रीवारहित करने का आदेश करता है।

इतनी बात ध्यान में रखनी चाहिए कि यह राजा का कर्त्तव्य है। वही निर्णय कर सकता है कि कौन आततायी है और कौन नहीं। यदि प्रत्येक मनुष्य ही यह निर्णय करे तो फिर व्यवस्था ही न रह सकेगी, इसीलिए समाज-व्यवस्था एवं राज्यस्थापना की जाती है।

-स्वाध्याय संदोह से साभार

श्रद्धया देयम्-अश्रद्धया देयम्

-ले० पण्डित वेदप्रकाश शास्त्री, 4-कैलाश नगर, फाजिल्का

(गतांक से आगे)

दान के प्रति दृढ़ संकल्प होना चाहिए। क्योंकि दान एक कठिन कार्य है। अत: अश्रद्धा भी उत्पन्न हो सकती है। इसलिए आचार्य ने शिष्य को सावधान किया है कि दान की प्रवृत्ति नष्ट नहीं होनी चाहिए।

इसका एक कारण यह भी है कि छात्र को गुरुकुल के कठोर अनुशासन में रहना पड़ता है। यह आवश्यक नहीं कि वह गुरुकुल के सभी नियमों से सहमत हो। परन्तु आचार्य और माता-पिता के भय से वह वहां अध्ययन कर रहा हो। अत: गुरुकुल से दीक्षान्त के बाद वह स्वतन्त्र हो जाता है। गुरुकुल के बन्धन समाप्त हो जाते हैं। इसीलिए आचार्य ने शिष्य को उपदेश दिया है कि अश्रद्धया से भी देना चाहिए।

पूर्णत: स्पष्टीकरण हेतु एक अन्य उदाहरण प्रस्तुत करना अश्रेयस्कर न होगा-

एक राजा ने अपने मन्त्री को बुलाया और कहा-''महामात्य! अब मेरा अन्तिम समय निकट है। राजकुमार की आयु अत्यल्प है। वह शासन करने के योग्य नहीं। अत: इसकी शिक्षा-दीक्षा का समस्त उत्तरदायित्व आप पर है। अभी शासन की बागडोर आप के हाथ में रहेगी। पूर्णरूपेण शासन के योग्य होने पर आप राजगद्दी राजकुमार को सौंप देना।''

'तथास्तु' कहते हुए अमात्य ने भी अपनी स्वीकृति कर दी।

अत्यन्त कठोर अनुशासन में राजकुमार की शिक्षा-दीक्षा प्रारम्भ हुई। धीरे-धीरे वह दिन भी आ गया जब राजकुमार पूर्णत: योग्य शासक और प्रशासक हो गया। दिए गए वचनानुसार अमात्य ने राजकुमार का राज्यारोहण बड़े ही हर्षोल्लास से सम्पन्न किया। शनै: शनै: राजकुमार ने शासन-प्रशासन पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली। प्रजा राजकुमार के शासन एवं उदारतापूर्ण निष्पक्ष व्यवहार से सन्तुष्ट ही नहीं अपितु भली भांति प्रसन्न थी खुशहाल थी। गुणगान करती थी।

एक दिन राजकुमार ने उसी शिक्षक अमात्य को मन्त्रीपद से हटाकर बाहर का रास्ता दिखा दिया। उसका कहना था-''मन्त्रिवर! आपने मुझे बहुत कष्ट दिया है, इतने कठोर अनुशासन में रखा है कि उस समय होने वाले कष्टों को मैं ही जानता हूं। अभी तक भूला नहीं हूं। अब आप भी देखें कि वे कष्ट क्या होते हैं।''

अमात्य दर-दर की ठोकरें खाने लगा। एक बार राजकुमार हाथी पर सवार होकर राज्य का भ्रमण करते हुए संयोगवश उसी मार्ग से निकला, जहां वही अमात्य एक वृक्ष के नीचे असहाय अवस्था में बैठा हुआ था। उस समय राजकुमार व्यंग्यात्मक शब्दों में बोला-'कहिए अमात्य जी अब आपको कठिनाइयों का पता लगा, जो आपने कठोर अनुशासन में रखकर मुझे दी थीं ?

अमात्य ने अत्यन्त शान्त एवं गम्भीर स्वर में उत्तर दिया-'राजकुमार मुझे अपने कष्टों की बिल्कुल चिन्ता नहीं अपितु इस बात की अत्यन्त प्रसन्नता है कि उसी कठोर अनुशासन के कारण आज राजकुमार के राज्य में प्रजा अत्याधिक खुशहाल है और उनके गुणगान कर रही है।

इतना सुनते ही राजकुमार को अपनी गलती का अहसास हुआ। आंखें खुल गई। वह तुरन्त ही हाथी से नीचे उतर पड़ा और अमात्य के पैर पकड़ कर बोला-''भगवान् आप धन्य हैं। आपकी महत्ता को भूलकर मैं ही अज्ञानान्धकार में गिर गया था। क्षमा करें गुरुदेव बहुत बड़ी भूल हुई। मन्त्रिवर आप चलें और पुन: अमात्य पद को सुशोभित कर मुझे प्रायश्चित का सुअवसर प्रदान करें। अपराध बोध से मैं स्वयं लज्जित हूं।''

गुरुकुलों में कठोर अनुशासन के कारण दीक्षान्त के बाद छात्र में विरोध-विद्रोह-स्वच्छन्दता की भावना भी जागृत हो सकती है। कहीं दान परम्परा नष्ट न हो जाए। इसीलिए आचार्य ने श्रद्धया/अश्रद्धया से दान करते रहने की शिक्षा दी है। गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली की यह सर्वश्रेष्ठ दीक्षा है, जिसमें गुरु आज्ञा को शिरोधार्य करने के अतिरिक्त सम्भवत: अन्य कोई विकल्प नहीं होता। आचार्य इससे पूर्णत: आश्वस्त और विश्वस्त भी होता है। वस्तुत: गुरुकुल ही गुरु का कुल अर्थात् परिवार होता है। आचार्य पितृवत् है तो सारे शिष्य पुत्रवत् कभी आचार्य शिष्यों के प्रति वज्र से भी अधिक कठोर हो जाता है तो कभी फूल से भी अधिक कोमल। अत: शिष्य के लिए अश्रद्धा भी श्रद्धा ही है। उसमें संस्कार इस प्रकार कूट-कूट कर भर दिए जाते हैं कि शिष्य आचार्य की शिक्षा के विपरीत जा ही नहीं सकता। एतदर्थ एक दृष्टान्त ही पर्याप्त है।

प्राचीन काल में गुरुकुल में शास्त्रीय शिक्षा के साथ ही सर्वपक्षीय व्यावहारिक शिक्षा एवं परीक्षा पर भी ध्यान दिया जाता था। गुरुकुल में राजा-रंक सभी के बालक समान होते थे।

एक बार एक राजा ने अपने राजकुमार को गुरुकुल में प्रवेश दिलाया। निर्धारित अवधि के पश्चात् शिक्षा पूर्ण होने का अवसर जानकर राजा गुरुकुल में गया। आचार्य जी से मिलकर पूछा-'आचार्य जी! क्या राजकुमार की शिक्षा पूरी हो गयी ?' आचार्य ने उत्तर दिया-'राजन! बस थोड़ी सी कसर बाकी रह गई है।

राजा के ठहरने के लिए अतिथिशाला में व्यवस्था की गई। आचार्य ने राजकुमार को झाड़ू लेकर अतिथिशाला की सफाई करने के लिए भेजा। राजा राजकुमार के हाथ में झाड़ू देखकर आश्चर्य में पड़ गया। कहां राजा, कहां यह राजकुमार और कहां उसके हाथ में यह झाड़ू ? फिर भी संयत होते हुए बोला-'राजकुमार! हाथ में यह झाड़ू क्यों ? राजकुमार ने उत्तर दिया-'मुझे अतिथिशाला की सफाई करके आपको ठहराने की आज्ञा हुई है। अत: मैं सफाई करने आया हूं।' राजा ने कहा-'परन्तु तुम तो राजकुमार हो। झाड़ू लगाना तुम्हारा काम नहीं।' राजकुमार-यह गुरु की आज्ञा है। मैं इसका उल्लंघन नहीं कर सकता।' राजा यह काम तो सेवकों का है, राजकुमारों का नहीं।' राजकुमार- 'मैं इस समय राजकुमार नहीं अपितु एक छात्र हूं और छात्र का कार्य गुरु की आज्ञा का पालन करना है।' राजा चुप हो गया। राजकुमार ने झाड़ू लगाया। ठहरने की उचित व्यवस्था करके वह बाहर चला गया।

तत्पश्चात् आचार्य जी ने अतिथिशाला में प्रवेश किया। राजा खड़ा हो गया। औपचारिक बातचीत के पश्चात् आचार्य जी बोले-'राजन्! राजकुमार की शिक्षा पूरी हो गई। अब आप इसे ले जा सकते हैं।' राजा आश्चर्य में पड़ गया। सोचने लगा-अभी कुछ देर पहले तो कह रहे थे, थोड़ी सी शिक्षा बाकी रह गई है और अब कह रहे हैं, शिक्षा पूरी हो गई।

राजा ने पूछ ही लिया-'कुछ देर पहले तो आप कह रहे थे-थोड़ी सी शिक्षा बाकी रह गई है और अब आप कह रहे हैं कि शिक्षा पूरी हो गई है ? भला इतनी जल्दी कैसे पूरी हो गई ?

आचार्य जी बोले-'राजन्! मैं राजकुमार की परीक्षा ले रहा था। कहीं राजकुमार में राजसत्ता का अभिमान तो नहीं, झाड़ू लिए हुए पिता के सामने आत्महीनता का अनुभव तो नहीं कर रहा ? कहीं गुरु की आज्ञा के प्रति विद्रोह तो नहीं ? पिता को देखकर कहीं स्वामित्व की भावना तो नहीं जागृत हो गई ? परन्तु राजकुमार में ऐसा कुछ भी नहीं। वह परीक्षा में सफल रहा। मैं समझता हूं कि वह दत्तचित होकर प्रजा की सेवा करेगा। अत: अब शिक्षा पूर्ण हुई।'

यह सुनकर राजा अश्रुपूरित नेत्रों से आचार्य के चरण स्पर्श करते हुए बोला-'धन्य है गुरु देव! शतश: नमन आचार्यवर!

आज कहां हैं ऐसे महान् आचार्य? कहां है ऐसे आज्ञापालक शिष्य? अब तो यह केवल कथाओं में ही विद्यमान हैं।

शिष्य भी तो आखिर मनुष्य ही है। उसमें भी विकार आ सकते हैं। अत: दान की परम्परा में नैरन्तर्य बनाए रखने के लिए आचार्य ने शिष्य को सावधान किया है-

श्रद्धया देयम्। अश्रद्धया देयम्।।

आशा है श्रद्धा अथवा अश्रद्धापूर्वक इस शंका समाधान से जिज्ञासु महाशय पूर्णत: सन्तुष्ट होंगे। प्रतिक्रियाएं सादर आमन्त्रित हैं।

सम्पादकीय.....✍

महर्षि दयानन्द का सार्वभौम उद्देश्य

महर्षि दयानन्द को कई बार लोग केवल समाज सुधारक समझते हैं। कई केवल हिन्दू धर्म का सुधारक समझते हैं। कई उन्हें मत-मतान्तरों का केवल खण्डन करने वाला समझते है। कई उन्हें केवल राष्ट्रवादी समझते हैं। लोगों ने अपनी-अपनी बुद्धि और ज्ञान के अनुसार महर्षि दयानन्द के सम्बन्ध में नाना प्रकार के मत बनाए हुए हैं। इस प्रकार के मत तथा विचार उन्हीं लोगों के बनाए हुए हैं जिन्होंने महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों, कार्यों तथा जीवनी को ध्यानपूर्वक तथा निष्पक्ष दृष्टि से नहीं पढ़ा है और न ही समझा है। उनकी वास्तविकता को समझने के लिए अपने-आप को स्वार्थ तथा पक्षपात से रहित करना पड़ेगा तभी हम उनके बारे में सही निष्कर्ष पर पहुंच सकते है।

महर्षि दयानन्द का निश्चित मन्तव्य तथा आधार भूत सिद्धान्त है कि ईश्वर समस्त सृष्टि का रचयिता, पालक तथा राजा है और सृष्टि में निवास करने वाले समस्त प्राणी उसकी सन्तान और प्रजा हैं। सांसारिक राज्यों में प्रजा को नियन्त्रण तथा व्यवस्था में रखने के लिए कुछ नियम हुआ करते हैं परन्तु इनमें आवश्यकतानुसार समय-समय पर परिवर्तन भी कर लिया जाता है, चूंकि सांसारिक राजा अथवा सरकार अल्पज्ञ होती है। परन्तु ईश्वर सर्वज्ञ है। अत: उसके राज्य के नियम अपरिवर्तनशील हुआ करते हैं और वे समस्त संसार के प्रयोग के लिए होते हैं। इन्हीं अपरिवर्तनशील नियमों को वेद अथवा ज्ञान कहा गया है। इसको सार्वभौम मानव धर्म, वैदिक धर्म, सनातन धर्म कहा गया है। यह वैदिक धर्म सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत के समय तक समस्त संसार में फैला हुआ था। महाभारत के पश्चात अन्य दूसरे मत-मतान्तरों का उदय हुआ और अनेक मत पन्थ तथा सम्प्रदाय फैल गए। इस प्रकार संसार में ईश्वरीय, सार्वभौम, सर्वतन्त्र तथा सनातन सत्यों के स्थान में मनुष्यों के चलाए मत, पन्थ, मजहब और सम्प्रदाय स्थापित हो गये। महर्षि दयानन्द ने इन्हीं मनुष्यों के चलाये हुए मत, पन्थ, सम्प्रदाय और मजहबों के विरूद्ध और सार्वभौम, सर्वतन्त्र और सनातन सत्यों का फिर से संसार में प्रचार करने के लिए सिंहनाद किया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इन्हीं सार्वभौम नियमों को समस्त भूमण्ड़ल में प्रचार करने के लिए आर्य समाज नामक संस्था की स्थापना की। महर्षि ने आर्य समाज के जो नियम बनाएं उन नियमों को सार्वभौम नियम कहा गया। यह नियम केवल आर्य समाज के लिए ही नहीं अपितु समस्त प्राणीमात्र के लिए हैं। इन नियमों के ऊपर चलकर कोई भी अपनी उन्नति कर सकता है। इन नियमों में कहीं भी किसी मत, पन्थ और सम्प्रदाय का विरोध नहीं हैं। आर्य समाज के नियमों में किसी व्यक्ति विशेष का वर्णन नहीं है। आर्य समाज का उद्देश्य केवल किसी एक वर्ग विशेष का कल्याण नहीं बल्कि संसार का उपकार करना आर्य समाज का लक्ष्य है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश में लिखते हैं कि मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूं कि जो तीन काल में सब को एक सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मत-मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना, मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझ को अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्य्यावर्त में प्रचारित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता किन्तु जो-जो आर्य्यावर्त वा अन्य देशों में अधर्मयुक्त चाल चलन है उसका स्वीकार और जो धर्मयुक्त बातें हैं उनका त्याग नहीं करता, न करना चाहता हूं क्योंकि ऐसा करना मनुष्य धर्म से बहि: है। सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं कि मेरा इस ग्रन्थ को बनाने का प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है अर्थात जो सत्य है उस को सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा जाता है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाए। किन्तु जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है। जो मनुष्य पक्षपाती होता है वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत होता है। इसलिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता। इसलिए विद्वान आप्तों का यही काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्य असत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात वे स्वयं अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश में प्रथम के दस समुल्लास मण्डनात्मक और अन्त के चार खण्डनात्मक लिखे हैं। उन्होंने जहां भी कोई बुराई देखी उसी का निर्भयता और बलपूर्वक खण्डन किया। महर्षि उस सत्य सनातन वैदिक धर्म का प्रचार करना चाहते थे जिसमें किसी के प्रति वैर विरोध की भावना न हो, हिंसा न हो, विश्व बन्धुत्व की भावना हो। वे समाज में धर्म के नाम पर फैले हुए सभी मत-मतान्तरों को समाप्त करना चाहते थे। वे तो समस्त संसार में से बुराईयों को निकाल कर और उनके स्थान में सद्गुण लाकर उसे एक सूत्र में बांधना चाहते थे। संसार में से सदाचार, मानवता का कहीं नाम नहीं था वे इसे पुन: संसार में स्थापित करना चाहते थे। इसलिए वे इस युग के जगत् गुरू थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना करते हुए जो नियम बनाए हैं वे सार्वभौम हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती किसी एक समुदाय का ही नहीं अपितु प्राणीमात्र का हित चाहते थे। उनके बनाए हुए नियम किसी वर्ग विशेष के लिए नहीं अपितु सार्वभौम हैं। महर्षि दयानन्द जी की यही विशेषता उन्हें अन्य मत, पन्थ और सम्प्रदायों से अलग करती है। इसलिए माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को एक महान् पुरूष बताया और कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने अगर अपने शिष्य श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा को विदेश नीति सीखने को न कहा होता तो हम आजाद नहीं हो पाते। स्वामी जी ने हर इन्सान के लिए वेदों को पढ़कर जो ज्ञान दिया वो वाकई में सत्य का प्रकाश करना ही था और यह सत्यार्थ प्रकाश वास्तव में अमृत है, इसे ग्रहण करने वाला धन्य हो जाता है। आर्य समाज ने हमेशा राष्ट्र के कल्याण के लिए कार्य किया है और आगे भी इसी दिशा में कार्य करता रहेगा।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा का आयोजन

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सहयोग से आर्य वीर दल लुधियाना द्वारा सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा का आयोजन लुधियाना में किया जा रहा है जिसमें 7, 8, 9 कक्षा के बच्चे भाग ले सकते हैं। जो भी बच्चे सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षा में भाग लेना चाहते हैं वे बाल सत्यार्थ प्रकाश की कॉपी आर्य वीर दल लुधियाना से प्राप्त कर सकते हैं जिसका कोई मूल्य नहीं है। परीक्षा में प्रथम आने वाले बच्चे को 3100 रूपये, दूसरे नंबर पर आने वाले बच्चे को 2100 रूपये, तीसरे नंबर पर आने वाले बच्चे को 1100 रूपये और इसके बाद के 10 बच्चों को 500 रूपये पारितोषिक के रूप में दिए जाएंगे।

परीक्षा की तिथि-28 फरवरी 2016

नाम रजिस्ट्रेशन- 20 फरवरी स्थान लुधियाना

समय-11 से 1 बजे तक।

सम्पर्क सूत्र- सुमित आर्य-9915781101, सिद्धान्त अबरोल-9855832223, मनोज धवन- 8195019977

पाप दूर करने का वैदिक साधन अघमर्षण के तीन मन्त्र व उनके अर्थ

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला रोड, देहरादून

मनुष्य जाग्रत अवस्था में कोई न कोई कर्म अवश्य करता है। यह कर्म दो प्रकार के होते हैं जिन्हें शुभ व अशुभ अथवा पुण्य व पाप कह सकते हैं। मनुष्य का जन्म ही पूर्वजन्मों के शुभ व अशुभ कर्मों के फलों के भोग के लिए हुआ है। शुभ व सत् कर्मों का फल सुख व विपरीत कर्मों का फल दुख होता है। संसार में मनुष्य अन्य प्राणियों से इस अर्थ में भिन्न है कि उसके पास निश्चयात्मक बुद्धि होती है जिससे निर्णय करके वह किसी कर्म को करता है। मनुष्येतर अन्य प्राणियों में बुद्धि होती तो है परन्तु वह अपने स्वाभाविक ज्ञान के अनुसार ही कार्य करती है। वह सत्य व असत्य का निर्णय नहीं कर सकती। यदि वह विचार व चिन्तन कर सकते तो सम्भव था कि वह मनुष्य की तुलना में अधिक अच्छे व श्रेष्ठ कर्म करते। वर्तमान में भी गाय, बैल, घोड़ा, भैंस, भेड़, बकरी आदि पशु मनुष्यों से कहीं अधिक मनुष्यों का उपकार करते हुए दिखते हैं। मनुष्य तो इन पशुओं का उपयोग व दुरुपयोग करता है।

मनुष्य योनि उभय योनि है। इसमें मनुष्य पूर्व व वर्तमान जन्मों के कर्म भोगने के साथ नए शुभ-अशुभ कर्म भी करता है। अशुभ कर्मों का परिणाम दुख होता है जिससे मनुष्य बच सकता है यदि दुखों का कारण अशुभ कर्मों व पाप को हटा दे अर्थात् अशुभ कर्म न करे। अत: मनुष्य को शुभ व अशुभ कर्मों का ज्ञान होना चाहिए और भविष्य में दु:खों से बचने के लिए उसे केवल शुभ कर्म ही करने चाहिए। बुरे कर्मों को विवेकपूर्वक रोक देना चाहिए। इन पाप कर्मों से बचने के लिए महर्षि दयानन्द ने अपनी 'वैदिक सन्ध्या पद्धति' में 'अघमर्षण मन्त्र' को लिखकर व इनकी व्याख्या करके शुभ व अशुभ कर्मों के परिणाम व फलों को जानकर पाप कर्मों के त्याग करने का विधान किया है जिससे हमारा भविष्य सुरक्षित व सुखी हो। जिन अघमर्षण मन्त्रों की चर्चा हमने की है वह वैदिक सन्ध्या पद्धति का एक भाग है। महर्षि दयानन्द ने ईश्वर के सम्यक् ध्यान के लिए की जाने वाली वैदिक सन्ध्या में गायत्री मन्त्र से शिखा बन्धन, आचमन मन्त्र, इन्द्रियस्पर्शमन्त्र, मार्जनमन्त्र, प्राणायामन्त्र, अघमर्षणमन्त्र, मनसापरिक्रमामन्त्र, उपस्थानमन्त्र, समर्पणमन्त्र और समाप्ति पर नमस्कारमन्त्र के मन्त्रों का पाठ करने का विधान किया है। महर्षि दयानन्द के यह विधान बहुत ही युक्तिसंगत है और साधक व उपासक को सन्ध्या के फल प्राप्त कराने में पूर्णत: समर्थ है। सन्ध्या करने का प्रयोजन है कि ईश्वर से हमें मनोवांछित आनन्द अर्थात ऐहिक सुख-समृद्धि, हम पर सर्वदा सुखों की वर्षा और पूर्णानन्द की प्राप्ति व मोक्ष के आनन्द की प्राप्ति हो।

इन लाभों के अतिरिक्त सन्ध्या में शरीर की रक्षा व इसको स्वस्थ रखने आदि की अनेक प्रार्थनाएं निहित हैं। अघमर्षण के सन्ध्या में सम्मिलित तीन मन्त्र हैं-'ओ३म् । ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत तत: समुद्रोऽअर्णव:।।1।। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरोऽअजायत। अहोरात्राणि विद्धद विश्वस्य मिषतो वशी।।2।। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वम-कल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्व:।।3।।' अपने जीवन से पापों को दूर करने के लिए इन मन्त्रों का पाठ करने के बाद इनके यथार्थ अर्थों पर विचार करना व उससे मिलने वाली शिक्षा का पालन करना आवश्यक है। पहले मन्त्र का अर्थ है कि सब जगत का धारण और पोषण करने वाला और सबको वश में करने वाला परमेश्वर, जैसा कि उसके सर्वज्ञ विज्ञान में जगत् के रचने का ज्ञान था और जिस प्रकार पूर्वकल्प की सृष्टि में जगत् की रचना थी और जैसे जीवों के पुण्य-पाप थे, उनके अनुसार ईश्वर ने मनुष्यादि प्राणियों के देह बनाए हैं। जैसे पूर्व कल्प में सूर्य चन्द्रलोक रचे थे, वैसे ही इस कल्प में भी रचे हैं जैसे पूर्व सृष्टि में सूर्यादि लोकों का प्रकाश रचा था, वैसा ही इस कल्प में रचा है तथा जैसी भूमि प्रत्यक्ष दिखती है, जैसा पृथिवी और सूर्यलोक के बीच पोलापन है, जितने आकाश के बीच में लोक हैं, उनको ईश्वर ने रचा है। जैसे अनादिकाल से लोक-लोकान्तर को जगदीश्वर बनाया करता है, वैसे ही अब भी बनाए हैं और आगे भी बनाएगा, क्योंकि ईश्वर का ज्ञान विपरीत कभी नहीं होता, किन्तु पूर्ण और अनन्त होने पर सर्वदा एकरस ही रहता है, उसमें वृद्धि, क्षय और उलटापन कभी नहीं होता। इसी कारण से 'यथापूर्वम-कल्पयत्' इस पद का ग्रहण किया है। इस मन्त्र व मन्त्रार्थ में सृष्टि रचना, उसका प्रयोजन, जीवों के पूर्व कर्मों के अनुसार मनुष्यादि देह बनाने पर प्रकाश डाला है। इससे यह भी ज्ञात होता है कि इस सृष्टि का स्वामी ईश्वर है और जीव के कर्मों के फल, दण्ड-दु:ख व सुख, देने के लिए उसने मनुष्यादि प्राणियों के देह बनाए हैं।

अघमर्षण के दूसरे मन्त्र का अर्थ है कि उसी ईश्वर ने सहज स्वभाव से जगत् के रात्रि, दिवस, घटिका, पल और क्षण आदि को जैसे पूर्व थे वैसे ही रचे हैं। इसमें कोई ऐसी शंका करे कि ईश्वर ने किस वस्तु से जगत् को रचा है ? उसका उत्तर यह है कि ईश्वर ने अपने अनन्त सामर्थ्य से सब जगत् को रचा है। ईश्वर के प्रकाश से जगत् का कारण प्रकाशित होता और सब जगत के बनाने की सामग्री ईश्वर के अधीन है। उसी अनन्त ज्ञानमय सामर्थ्य के सब विद्या के खजाने वेदशास्त्र को प्रकाशित किया है जैसा कि पूर्व सृष्टि में प्रकाशित था और आगे के कल्पों में भी इसी प्रकार से वेदों का प्रकाश करेगा। जो त्रिगुणात्मक अर्थात्, सत्व, रज और तमोगुण से युक्त हैं, जो स्थूल और सूक्ष्म जगत् का कारण है सो भी कार्यरूप होके पूर्वकल्प के समान उत्पन्न हुआ है। उसी ईश्वर के सामर्थ्य से जो प्रलय के पीछे एक हजार चुतुर्युगी के प्रमाण से रात्रि कहाती है, सो भी पूर्व प्रलय के तुल्य ही होती है। इसमें ऋग्वेद का प्रमाण है कि, ''जब-जब विद्यमान सृष्टि होती है, उसके पूर्व सब आकाश अन्धकाररूप रहता है, उसी का नाम महारात्रि है। तदनन्तर उसी सामर्थ्य से पृथिवी और मेघ मण्डल अन्तरिक्ष में जो महासमुद्र है, सो पूर्व सृष्टि के सदृश ही उत्पन्न हुआ है। तीसरे मन्त्र में ईश्वर ने मनुष्यों को शिक्षा देते हुए कहा है कि उसी समुद्र की उत्पत्ति के पश्चात् संवत्सर, अर्थात् क्षण, मुहुर्त, प्रहर आदि काल भी पूर्व सृष्टि के समान उत्पन्न हुआ है। वेद से लेकर पृथिवीपर्यन्त जो यह जगत् है, सो सब ईश्वर के नित्य सामर्थ्य से ही प्रकाशित हुआ है और ईश्वर सबको उत्पन्न करके, सबमें व्यापक होकर अन्तर्यामिरूप से सबके पाप-पुण्यों को देखता हुआ, पक्षपात छोड़ के सत्य न्याय से सबको यथावत् फल दे रहा है। इन अर्थों को प्रस्तुत कर महर्षि दयानन्द कहते हैं कि ऐसा निश्चित जान के ईश्वर से भय करके सब मनुष्यों को उचित है कि मन, वचन और कर्म से पापकर्मों को कभी न करें। इसी का नाम अघमर्षण है अर्थात् ईश्वर सबके अन्त:करण के कर्मों को देख रहा है, इससे पापकर्मों का आचरण मनुष्य लोग सर्वथा छोड़ दें। महर्षि दयानन्द के इस सत्परामर्थ और प्रात: व सायं दोनों समय सन्ध्या करते समय अघमर्षण मन्त्रों के अर्थों पर विचार करते हुए मनुष्य जान लेता है कि वह जैसे पाप व पुण्य कर्म करेगा, ईश्वर की व्यवस्था से उसको उन कर्मों का सुख व दु:ख रूपी फल या दण्ड आदि यथायोग्य अवश्य मिलेगा। (**शेष पृष्ठ 6 पर**)

पृथिवी परिभ्रमण का वेद विज्ञान

-ले० आचार्या सूर्या देवी चतुर्वेदा, पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी

(गतांक से आगे)

प्रकृत मन्त्र में वर्षेण भूमि: पृथिवी वृता-वृता आए पद पृथिवी के विद्यमान यस्यां कृष्णमरुणं संहिते अहोरात्रे विहिते भूम्यामधि मन्त्र चरण पृथिवी की दैनिक गति का संकेत दे रहा है।

पृथिवी अपनी धुरी पर लट्टू की भांति घूमती रहती है। पृथिवी की अपनी धुरी पर घूमने का एक चक्र 24 घण्टे में पूर्ण होता है। पृथिवी के इस चक्र से ही दिन रात बनते हैं, पृथिवी के इस चक्र को भूगोल विद्या शास्त्र में पृथिवी की दैनिक गति कहा गया है। पृथिवी की इस दैनिक गति में उसका आधा भाग सूर्य के प्रकाश में होता है और आधा भाग अन्धकार में होता है। प्रकाश का भाग दिन कहाता है, अन्धकार का भाग रात्रि कहाती है।

वार्षिक गति में पृथिवी 365 दिन में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करती है। यह पृथिवी की परिक्रमा पृथिवी की वार्षिक गति कही जाती है। वर्षेण भूमि: पृथिवी वृतावृत मन्त्र में आए पद पृथिवी की वार्षिक गति के प्रकार का संकेत दे रहे हैं कि उत्पादक पृथिवी, वर्षेण-अपनी वार्षिक गति से, वृता-सूर्य के चारों ओर घूमती हुई, आवृता लौट आती है।

पृथिवी सूर्य का चक्र लगाती है। इस वेदोक्त विज्ञान के सुविचार से सभी परिचित हैं, बखूबी इस तथ्य को सभी जानते हैं महद् आश्चर्य है, पृथिवी सम्बन्धी इस यथार्थ विज्ञान को मध्यकाल में अज्ञान की पर्तों से ढक दिया गया। आज से लगभग 467-500 वर्ष पूर्व पाश्चात्य विद्वानों में एक सुदृढ़ अवधारणा थी कि पृथिवी स्थिर है, सूर्य पृथिवी का चक्र लगाता है। बाइबिल में इसी विचार का प्रतिपादन था। पाश्चात्य विद्वानों का यह अयथार्थ विचार भूकेन्द्रित था यानि पृथिवी ब्रह्माण्ड का अचल केन्द्र है, वे ऐसा मानते थे।

सूर्य नक्षत्र तथा अन्य खगोलीय पिण्ड पृथिवी का चक्र काटते हैं। इस मत का क्रमबद्ध अन्तिम रूप अलेक्जेन्ड्रिया के यूनानी दार्शनिक कलाडियस टॉलमी ने प्रस्तुत किया गया। सन् 140 के लगभग उसने खगोलिकी एक विश्वकोश बनाया, जिसका संक्षिप्त संस्करण अल्मगेस्त नाम से 1400 वर्षों तक खगोलिकी का बाइबिल माना जाता रहा। वह अल्मगेस्त अरबी भाषा में है।

पाश्चात्य विद्वानों के भूकेन्द्रित सिद्धान्त पर टिके सूर्य पृथिवी का चक्र लगाता है, इस विचार का आगे चलकर विखण्डन हुआ और सूर्य केन्द्रित सिद्धान्त पर आद्धृत पृथिवी सूर्य का चक्कर लगाती है, इस तथ्य का पुन: प्रवर्तन हुआ। यह प्रवर्तन 1473-1545 ईस्वी के मध्य सर्वप्रथम पौलैण्डवासी खगोलज्ञ निकोलस कापरनिकस द्वारा किया है। 1543 में कापरनिकस ने डी. रिवोलुशनिबस आरबियन सोयलेसटियम नामक पुस्तक प्रकाशित कर उसमें इस सिद्धान्त की स्थापना की, कि सूर्य ब्रह्माण्ड का केन्द्र है एवं पृथिवी तथा अन्य ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं। इसी प्रकार जर्मन खगोलज्ञ जोहनीस केप्लर (1570-1630), इटली खगोलज्ञ गैलिलियो गेलिली (1564-1642) एवं आइज़ाक न्यूटन (1642-1726) आदि ने भी सूर्य केन्द्रित सिद्धान्त का तथा पृथिवी आदि ग्रह सूर्य का चक्कर लगाते हैं, इस विज्ञान को ही सुदृढ़ अपराजय तर्कों से सम्पुष्ट किया, एवं बाइबिल और ईसाई मत के विपरीत आवाज़ उठाई।

इन वैज्ञानिकों के विचार से यूरोप में 17वीं शताब्दी के आरम्भ में खलबली मच गई, उनके धार्मिक लोगों ने आन्दोलन किया। परिणामस्वरूप गैलिलियों को दण्ड मिला, जेल में जाना पड़ा। पर कापरनिकस, गैलिलियो आदि वैज्ञानिकों के अन्वेषण तथ्यपूर्ण थे, अत: ईसाई धर्मगुरुओं को विवश होकर उन वैज्ञानिकों के सूर्य केन्द्रित तथा पृथिवी भ्रमण के विचार को मानना पड़ा।

जिन वैज्ञानिकों का यह मत था कि ब्रह्माण्ड भूकेन्द्रित है, सूर्य पृथिवी के चक्कर लगाता है, उनकी दलीलें थीं-

1. यदि पृथिवी सूर्य की प्रदक्षिणा करती है, यह मन्तव्य होगा, तब पृथिवी पश्चिम से पूर्व की ओर चलती हुई घूमती है, उस अवस्था में पक्षी अपने घौंसलों से निकलकर जब आकाश में अपने आहार आदि के लिए जाएंगे, तब लौटते समय उन पक्षियों को अपने घौंसले नहीं मिलेगें। क्योंकि पृथिवी कहीं से कहीं आगे चली जाएगी और आकाश व पक्षी पीछे रह जाएंगे।

2. यदि पृथिवी सूर्य का चक्कर लगाती है, यह माना जाए तो ऐसी दशा में ध्वज आदि लहराती हुई वस्तुएं पश्चिम की ओर ही उड़ती हुई सर्वदा दिखाई देनी चाहिए। किन्तु ऐसा नहीं होता। उत्तर की वायु आने पर ध्वज आदि उड़ने वाली वस्तुएं दक्षिण में उड़ती हुई दिखती हैं, अत: प्रतीत होता है कि पृथिवी नहीं घूमती।

3. पृथिवी के द्वारा सूर्य भ्रमण मानने पर यह बड़ी हानि होगी कि ऊंचे-ऊंचे, बड़े-बड़े मकानों, स्तूपों आदि के शिखर पृथिवी के नीचे, ऊपर होने से गिर पड़ेंगे।

भूकेन्द्रित सिद्धान्त का विखण्डन करने वाले कापरनिकस आदि सूर्य केन्द्रित सिद्धान्त को मानने वाले वैज्ञानिकों की युक्तियां थीं-

1. पृथिवी जब घूमती है, तब पृथिवी के उस घूमने में जो वेग होता है, वह वेग पृथिवीस्थ सभी पदार्थों में ही होता है। वह वेग पक्षी तथा उसके घौंसले में भी होगा, जिसे पक्षियों को घौंसले न मिलने का दोष नहीं आएगा। पृथिवी के ऊपर एक वायु चक्र विद्यमान है, जो पृथिवी को छिन्न-भिन्न होने से बचाता है, वह वायु चक्र पृथिवी के साथ-साथ रहता है। जिसके कारण पृथिवी के साथ-साथ पृथिवीस्थ पदार्थ भी उस वायु वेग के साथ चलते हैं। इस प्रकार जितने वेग से घौंसले पूर्व की ओर जाते हैं, उतने ही वेग से पक्षी भी उस वेग से उड़ते हैं, जिससे पक्षी अपने घौंसलों को नहीं भूलते।

2. पृथिवी जब घूमती है, तब पृथिवी परिभ्रमण का वेग ध्वज आदि वस्तुओं में भी विद्यमान होता है, इसलिए ध्वज आदि वस्तुएं पश्चिम की ओर ही सदा उड़ती हुई नहीं दिखाई देतीं, उड़ने की दिशा बदल जाती है।

3. ऊंचा-नीचा का ज्ञान पृथिवी के परिभ्रमण से ही होता है। परिभ्रमण करती हुई पृथिवी के वेग के ही साथ मकान आदि होते हैं। अत: ऊपर, नीचे होने पर भी वे नीचे नहीं गिरेंगे।

सूर्य भ्रमण में दोष:

सूर्य परिभ्रमण मानने पर अनेकों दोष हैं, जिनका समाधान असम्भव है-

1. पृथिवी के परिभ्रमण द्वारा पृथिवी की दैनिक गति से जो दिन-रात, वार्षिक गति से वर्ष और ऋतुएं आदि बनती हैं, वे सूर्य के परिभ्रमण से नहीं बन सकतीं।

2. अन्यच्च यदि सूर्य 24 घण्टे में पृथिवी के चारों ओर चक्र लगाता है, यह माना जाए तो निश्चित स्थान में उदय होना चाहिए और अस्त होना चाहिए, किन्तु ऐसा नहीं होता। वह तो वर्ष में केवल दो दिन 21 मार्च व 23 सितम्बर को भूमध्य विषुवत रेखा पर होने पर ठीक पूर्व दिशा में उदित होता है और पश्चिम दिशा में अस्त होता है।

3. अनेकों नक्षत्र ऐसे हैं जो वर्ष में एक दिन अथवा वर्ष के एक निश्चित भाग में प्रकाशित हुए दृष्टिगोचर होते हैं और नियत समय में छिप जाते हैं। पुन: वर्ष के पश्चात् ठीक वहीं उसी स्थान पर दृष्टिगोचर होते हैं। नक्षत्रों की यह गति सूर्य की पृथिवी के चारों ओर गति मानने पर सम्भव नहीं। पृथिवी की सूर्य के चारों ओर गति मानने पर सम्भव है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

पृष्ठ 4 का शेष-पाप दूर करने का.....

इससे वह पाप व अशुभ कर्मों को छोड़ देता है। अत: सन्ध्या के यह तीन मन्त्र एवं इनके अर्थ पर विचार करने से मनुष्य से मनुष्य पापों को करना छोड़ देता है। इस पर भी यदि कोई पाप करता रहता है तो उसे बुद्धिहीन व मलिन मन व आत्मा वाला मनुष्य ही कह सकते हैं जो अन्धकार में पड़कर दु:ख का भागी होता है। यदि मनुष्य व संसार को पापों से बचाना है तो उसे वेदों की शरण में लाकर वेदों का अध्ययन कराकर अटल कर्मफल सिद्धान्त को जानकर अशुभ व पाप कर्मों को करने से छुड़ाना ही होगा। पाप कर्मों को छोड़ने व सन्ध्यादि करने से मनुष्य व जीवात्मा को अनेकानेक लाभ होंगे जिसमें इहलौकिक उन्नति सहित परजन्मों में उन्नति होने के साथ मोक्ष की सिद्धि भी हो सकती है। हम आशा करते हैं कि पाठक पाप त्याग के लिए इन मन्त्रों का प्रात: सायं पाठ करने के साथ इनके अर्थों पर भी गम्भीरता से विचार करेंगे और वैदिक साहित्य का अध्ययन कर अपने-अपने जीवन को मनुष्य बुरे कर्मों के कठोर दण्ड के भय से ही बुराईयों व पापों से दूर रहता है। देश व समाज में जो लोग अपराध नहीं करते उनका एक कारण यह है कि वह ईश्वर व सरकारी दण्ड व्यवस्था दोनों से डरते हैं। महर्षि दयानन्द ने सन्ध्या में विधान किए अघमर्षण मन्त्रों में भी ईश्वर की सर्वोपरि सत्ता व उसके दण्ड विधान 'कर्म फल सिद्धान्त' का उल्लेख किया है जो अनादि काल से चला आ रहा है और अनन्त काल यथापूर्व चलता रहेगा। ज्ञानी व सज्जन पुरुष ईश्वर के दण्ड व मोक्ष विधान को जानकर अपने समस्त जीवन में अपराध, पाप व अशुभ कर्मों से बचे रहते हैं व सुख-शान्ति-समृद्धि का अनुभव व भोग करते हैं। अत: महर्षि दयानन्द द्वारा अघमर्षण मन्त्रों का विधान सर्वथा उपयुक्त व समाज को अपराध मुक्त बनाने की दिशा में एक प्रशंसनीय कार्य है। अन्य मतों में तो संख्या बढ़ाने के लिए पाप क्षमा का विधान किया गया है जो कि सत्य नहीं हो सकता। क्योंकि पापों को क्षमा करना एक प्रकार पाप को बढ़ावा देना है जिसे ईश्वर कदापि नहीं करेगा।

गुरुकुल हरिपुर का वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल हरिपुर, जुनानी जिला नुआपड़ा का त्रिदिवसीय वार्षिक महोत्सव 29, 30, 31 जनवरी 2016 को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर गुरुकुल के संरक्षक श्री खुशहालचन्द्र जी आर्य कोलकाला के शुभ करकमलों से ओ३म् ध्वजोत्तोलन के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ, स्थानीय विधायक एवं ओड़िशा बी.जे.पी. के अध्यक्ष श्री बसन्त कुमार पण्डा जी के सहयोग से निर्मित गुरुकुल प्रवेश द्वार का लोकार्पण, गुरुकुल के प्रधान श्री जयदेव आर्य जी के सहयोग से प्रकाशित ओड़िया सत्यार्थप्रकाश का विमोचन, पांच कमरों का शुभ उद्घाटन, गुरुकुल में अध्ययनरत ब्रह्मचारियों का विविध शारीरिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम, देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे पूज्य साधु-सन्तों का उपदेश एवं अकाल पीड़ित 500 परिवारों को 25-25 किलो चावल व एक-एक साड़ी वितरण तथा ओड़िशा के दो मूर्धन्य विद्वान् डॉ. देवव्रत आचार्य जी एवं श्री प्रियव्रतदास जी का अभिनन्दन महोत्सव के अवसर पर किया गया।

इस अवसर पर उपस्थित 60 से अधिक साधु-सन्तों एवं विद्वानों को शाल, श्रीफल एवं धनराशि प्रदान करके जीवन दशा में श्राद्ध तर्पण किया गया। इस कार्यक्रम में राज्यसभा सदस्य श्री भूपेन्द्र सिंह, पूर्वविधायक श्री राजूभाई धोलकिया, बी. जे. डी. अध्यक्ष श्री प्रसन्न कुमार पाढ़ी, ज़िला परिषद् उपाध्यक्ष श्री भानुप्रताप माझी आदि उपस्थित थे।

ईश्वर की महति अनुकम्पा से त्रिदिवसीय समस्त कार्यक्रम के संचालक पूज्य आचार्य डॉ. सुदर्शनदेव जी के मार्गदर्शन व सान्निध्य में गुरुकुल के सम्मानीय आचार्यगण, अधिकारीगण, गुरुकुल के हितैषी, सेवाभावी महानुभावों के परिश्रम व सहयोग से सम्पन्न हुआ।

पृष्ठ 5 का शेष-पृथिवी परिभ्रमण.....

4. पृथिवी घूमती हुई जब चलती है तब उसका गोलार्द्ध सूर्य की ओर झुका रहता है। यदि सूर्य पृथिवी का चक्र लगाएगा, तो पृथिवी का झुकाव नहीं होगा। पृथिवी झुकी हुई दिखती है। इससे ज्ञात होता है कि पृथिवी पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती हुई चक्र लगाती है। घूमने का सिद्धान्त है जब कोई पदार्थ घूमता है तो वह अपने केन्द्रस्थान-मध्यस्थान की अपेक्षा दूरतन स्थान में अधिक होता है। इसलिए जब बहुत ऊंचे स्थान से कोई वस्तु गिराई जाती है तो वह वस्तु कुछ दूर पूर्वांश में गिरती है। जहां से वह गिराई जाती है, उस स्थान से ठीक नीचे नहीं गिरती। पृथिवी अपने स्थान से चलती हुई जब आगे बढ़ती है, तभी वार्षिक गति बनती है, अत: सूर्य द्वारा पृथिवी का परिभ्रमण अमान्य है। सूर्य परिभ्रमण में पृथिवी झुकाव 23 अंश होता है। पृथिवी परिभ्रमण प्रसंग में यह सिद्धान्त भी सुनिश्चित हैं कि सूर्य पृथिवी का तो चक्र नहीं लगाता अपितु सूर्य अपनी धुरी पर घूमता है। 150 मील प्रति सैकिण्ड की गति से वृत्ताकार पथ में सूर्य परिक्रमा करता है। अपनी धुरी पर सूर्य 27 दिन में एक चक्कर पूरा करता है। इस चक्र का प्रमाण सूर्य की सतह पर पाए जाने वाले धब्बे हैं, जो सूर्य के पश्चिम भाग से उसकी पूर्वी भाग की ओर चलते प्रतीत होते हैं। वस्तुत: ये धब्बे अपनी जगह स्थित हैं, सूर्य की गति के कारण घूमते से प्रतीत होते हैं।

सूर्य अपनी धुरी पर गति करता है, इसका संकेतक मन्त्र है-

स: सूर्य: पर्युरुवरांस्येन्द्रो ववृत्यादृथ्येव चक्रा। -ऋ. 10-89-2

अर्थात् स:-वह, इन्द्र: सूर्य:-ऐश्वर्यशाली सूर्य, उरू वरांसि-बहुत आवरणों के साथ, रथ्या इवा चक्रा-रथ सम्बन्धी चक्रों के समान, परि आ ववृत्यात्-चारों ओर घूमता है।

इस प्रकार वेद मन्त्रों से सुज्ञात हुआ कि पृथिवी सूर्य का चक्र लगाती है, सूर्य पृथिवी का नहीं। वेदों में भूगोल आदि विज्ञान के अनेकों स्रोत हैं। भूगोल के प्रतिपदार्थ की सूक्ष्मातिसूक्ष्म गतियों, स्वरूपों का वेदों में सुस्पष्ट वर्णन है।

आर्य वीर दल ने लाला लाजपतराय जी का जन्मदिन मनाया

भारत के गौरव लाला लाजपतराय जी के जन्मदिन पर आर्य वीर दल ने गायत्री महायज्ञ का आयोजन दयानन्द हॉस्पिटल के सामने किया। हवन यज्ञ में मुख्य मेहमान सुरेश चड्ढा जी, मनोज धवन जी, परवीन पाहवा जी और आशीष भनोट जी थे और आर्य स्कूल के बच्चों को लाला जी के जीवन के बारे में बताया। पंडित कर्मवीर जी शास्त्री और पंडित रमेश शास्त्री जी ने वैदिक मन्त्रों के साथ यज्ञ की पूर्ण आहुति करवाई और यजमानों को आशीर्वाद दिया। सविता जी और फोकल प्वाइंट से भजनीक जोड़ी वीरेन्द्र और देवेंद्र की जोड़ी ने देश भक्ति पर भजन प्रस्तुत किए। जिसमें जहां डाल-डाल पर सोने की चिड़िया, मेरा भारत महान, दिल दिया है जान भी देंगे आदि गीत प्रस्तुत किए। इसके बाद आर्य स्कूल के बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए और शारीरिक करतब का प्रदर्शन किया। आर्य स्कूल की लड़कियों ने और आर्य स्कूल के लड़कों ने जिम्नास्टक और कराटे का प्रदर्शन किया। आर्य वीर दल को आशीर्वाद देने के लिए पंजाब केसरी के मुख्य संपादक और पदम् श्री विजय चोपड़ा जी आए और आर्य समाज और आर्य वीर दल द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की और बताया कि कैसे वो भी आर्य परिवार में जन्म लिया और अभी भी आर्य समाज के कार्यों में भाग लेते रहते हैं और समय-समय पर समाज सेवा में अग्रसर रहते हैं। ज़िला सभा के मंत्री डॉक्टर सरीन जी और अरुण थापर जी ने युवाओं से अपील की कि जो युवा नशे में बर्बाद हो रहे हैं उनका नशा छुड़ाएं और नशे के विरोध में जबरदस्त आंदोलन चलाएं। सुमन हॉस्पिटल मॉडल टाउन से डॉक्टर सुमन जी ने युवक और युवतियों से बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ की मुहिम के लिए संकल्प करवाया और बताया कि नारी-नारी और नारी शक्ति ही जीवन का आधार है। यमुनानगर से आचार्य ज्ञानेश्वर जी ने वेदों की महिमा और ऋषि दयानन्द जी द्वारा दिखाए रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित किया। संजय विरमानी जी और राजिंदर शर्मा जी का प्रोग्राम को सफल बनाने में पूरा योगदान दिया और आर्य वीर दल लुधियाना स्वामी दयानन्द जयंती तक ज्यादा से ज्यादा सत्यार्थ प्रकाश बांटने की मुहिम चला रहा है जिसे जोरदार समर्थन मिल रहा है। इसकी पहली कॉपी भी पदम् श्री विजय चोपड़ा जी को भेंट की। इस अवसर पर ज़िला आर्य सभा के मंत्री डॉक्टर सरीन आर्य समाज दाल बाजार के प्रधान संजीव चड्ढा जी, मंत्री सुरेन्द्र टंडन जी, रमाकांत महाजन जी, सुभाष अबरोल, अनु गुप्ता, सविता, रमेश महाजन और आर्य वीर दल से सुमित आर्य, अजय महाजन, संदीप गौतम, सिद्धान्त अबरोल, मोहित महाजन, विशाल लूथरा, अर्पण पाहवा, गौरव पाहवा, आशीष, अतुल, धवन, सचिन टंडन आदि सम्मिलित हुए।

-सुमित आर्य आर्यवीर लुधियाना

आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकंडरी स्कूल पुराना बाजार में 10 दिवसीय योग शिविर

आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकंडरी स्कूल पुराना बाज़ार लुधियाना में दिनांक 29.1.2016 शुक्रवार को आर्य वीर दल के संयोजक श्री सुमित आर्य, श्री संजय विरमानी व उनके सहयोगियों द्वारा शिविर लगाया गया। जिसमें स्कूल के बच्चों ने भाग लिया। आचार्य शैल कुमार जी ने 10 दिन के अन्दर योगासन का प्रशिक्षण दिया।

इस अवसर पर स्कूल की प्रधानाचार्य श्रीमती ज्योति जोशी जी ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया तथा बच्चों को कार्यक्रम की बधाई दी। शास्त्री रमेश कुमार आर्य जी ने देश भक्ति गीत गाकर सबको मन्त्रमुग्ध कर दिया। इस कार्यक्रम में स्कूल की सभी अध्यापिकाओं का सहयोग रहा।

अन्त में प्रबन्धक कर्तृ सभा की मैनेजर श्रीमती राजेश शर्मा जी ने सबका धन्यवाद किया तथा बधाई दी। इस अवसर पर स्कूल के प्रधान श्री सुशील जी मोदगिल श्री विजय सरीन जी श्री जे. पी. पनेसर जी अन्य आर्य समाजों के गणमान्य सदस्य भी मौजूद थे।

बच्चों को विदाई पार्टी दी

आज 10.2.2016 को आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल में 10+2 कक्षा की विदाई पार्टी का आयोजन किया गया। जिसमें बच्चों ने रंगारंग प्रोग्राम प्रस्तुत किया और पंजाबी कलचर के अनुसार अंत में पंजाब का लोक नाच गिद्दा और भांगड़ा के साथ इस प्रोग्राम को समाप्त किया। इस विदाईगी समारोह में स्कूल की मैनेजिंग कमेटी के मैंबर और स्कूल की मैनेजर श्रीमती विनोद गांधी जी भी शामिल हुए। इस आयोजन पर बोलते हुए स्कूल की मैनेजर श्रीमती विनोद गांधी जी ने बच्चों को आगे बढ़ कर स्कूल का नाम रोशन करने के लिए प्रेरित किया। इसके साथ स्कूल के प्रिंसीपल की विजय पाल दयौड़ा जी ने भी बच्चों को आशीर्वाद दिया। इस आयोजन पर स्कूल का सभी स्टाफ इकट्ठा हुआ और स्कूल का मंच संचालक को श्री अश्विनी कुमार शर्मा जी ने किया और इस अवसर पर स्कूल के टीचर और अन्य कर्मचारी भी शामिल रहे।

निशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविर

आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर के संस्थापक अध्यक्ष स्वतन्त्रता सेनानी स्वर्गीय श्री छोटू सिंह आर्य की स्मृति में श्री छोटू सिंह आर्य धर्मार्थ हॉस्पिटल, अलवर के तत्वावधान में आर्य समाज अरावली विहार (काला कुआं), अलवर एवं जन सहयोग से मुख्य अतिथि एडवोकेट श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता, प्रधान, आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर के नेतृत्व में ''नि:शुल्क 75वां आयुर्वेदिक चिकित्सा एवं जांच शिविर'' दिनांक 14 फरवरी 2016, रविवार प्रात: 10.00 बजे से 12.30 बजे तक आर्य समाज, अरावली विहार (काला कुआं), अलवर में लगाया जाएगा।

शिविर का शुभारम्भ प्रात: 9.00 बजे यज्ञ से होगा एवं उद्घाटन 10.00 बजे डॉ. रविकान्त राणा के कर कमलों द्वारा किया जाएगा।

वैद्य भगवन दास मित्तल, ज़िला आयुर्वेद अधिकारी, भरतपुर (से. नि.) द्वारा रोगियों की गुर्दे की पथरी का इलाज बिना ऑपरेशन के आयुर्वेदिक दवाईयों से किया जाएगा तथा बच्चों में कुपोषण, उल्टी-दस्त, निमोनिया, सूखापन आदि की आवश्यकतानुसार दवाइयां नि:शुल्क दी जाएंगी। मधुमेह एवं बल्ड प्रेशर की नि:शुल्क जांच की जाएगी।

भारत मां की शान बढ़ा दो

-ले० पंडित नंदलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य पत्रकार आर्य सदन बहीन जनपद बहीन पलवल (हरियाणा)

भारत के नर-नारी जागो। वैदिक धर्म निभाओ, भारत की शान बढ़ाओ।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, भारत की शान बढ़ाओ।

किसी समय यह देश हमारा, दुनियां का था स्वामी।
विद्या बल में, रणकौशल में, था जगती में नामी।

पढ़ो सभी इतिहास पुराना, व्यर्थ न समय गंवाओ, भारत की शान बढ़ाओ
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, भारत की शान बढ़ाओ।

राम, भरत, लक्ष्मण जैसे थे भारत में बलधारी।
गौतम, कपिल, आजाद, जैमिनी थे वैदिक प्रचारी।

योगीराज कृष्ण, अर्जुन की जग को याद दिलाओ, भारत की शान बढ़ाओ
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, भारत की शान बढ़ाओ।

सावित्री, सीता कुन्ती सी थीं भारत में माता।
सती, देवकी जीजाबाई, सी थीं भाग्य विधाता।

याद करो पन्नादाई को, जीवन सफल बनाओ, भारत की शान बढ़ाओ।
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, भारत की शान बढ़ाओ।

ऋषियों के प्यारे भारत में, गऊएँ जाती मारी,
दिन पर दिन बढ़ते जाते हैं, जालिम अत्याचारी।

बन जाओ प्रताप शिवा, दुष्टों को मार गिराओ, भारत की शान बढ़ाओ
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, भारत की शान बढ़ाओ।

नेता बेईमान रात-दिन, करते हैं घोटाले।
आस्तीन में छुपकर बैठे, नाग पोनियां काले।

बिस्मिल शेखर बनो, पापियों के तुम शीश उठाओ, भारत की शान बढ़ाओ
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, भारत की शान बढ़ाओ।

नित्य लूटते हैं, अब गुण्डे, ललनाओं की असमत।
देश भक्त विद्वानों की होती है यहां फाजीहत।

मानवता के हत्यारों को, भारी सजा दिलाओ, भारत की शान बढ़ाओ
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, भारत की शान बढ़ाओ।

घूम रहे हैं आर्यावर्त में, अब लाखों पाखण्डी।
भंगड़ सुल्फेबाजों की, खुल गई देश में मण्डी।

देव दयानन्द बनो, वेद प्रचार करो, यश पाओ, भारत की शान बढ़ाओ
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, भारत की शान बढ़ाओ।

युवक-युवतियों को फैशन की है, घातक बिमारी।
मदिरा पीते नित्य अनाडी, जालिम मांसाहारी।

अपना प्यारा देश बचाओ, भारत के योद्धाओं, भारत की शान बढ़ाओ
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, भारत की शान बढ़ाओ।

उग्रवाद, आतंकवाद का, भारी जोर यहां है।
देशद्रोही गद्दारों का, भारी शोर यहां है।

कर दो ठीक मिजाज खलों के वीरों, मत दहलाओ, भारत की शान बढ़ाओ
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, भारत की शान बढ़ाओ।

भारत की प्यारी ललनाओ, अब तो निद्रा त्यागो।
दुर्गा लक्ष्मी बनो देवियो! किरणमई बन जागो।

नन्दलाल निर्भय दुनिया में, नाम अमर कर जाओ, भारत की शान बढ़ाओ
कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ, भारत की शान बढ़ाओ।

वेदवाणी

प्रभु की प्राप्ति

सदा व इन्द्रश्चर्कृषदा उपो नु स सपर्यन्।
न देवो वृतः शूर इन्द्रः॥

-साम० पू० ३।१।१।३

विनय-हे मनुष्यों! तुम अपने परमात्मा से प्रेम क्यों नहीं करते ? जहां हरिकथा होती है वहां से तुम भाग आते हो। बार-बार प्रभु-चर्चा होती देखकर तुम ऊबते हो, जबकि विषयों की चर्चाएं सुनने के लिए सदा लालायित रहते हो। तुम्हें उस अपने पिता से इतना हटाव क्यों हैं ? तुम चाहे जो करो, वह देव तो तुम्हें कभी भुला नहीं सकता। वह तो तुम्हें प्रेम से अपनी ओर आकर्षित ही कर रहा है, सदा आकर्षित कर रहा है, निरन्तर अपनी ओर खींच रहा है। तुम जानो या न जानो, पर वह अत्यन्त समीपता के साथ माता की भांति तुम-पुत्रों की निरन्तर परिचर्या भी कर रहा है। वह परमेश्वर हमारे रोम-रोम में रमा हुआ, हमारे एक-एक श्वास के साथ आता-जाता हुआ, हमारे मन के एक-एक चिन्तन के साथ तद्रूप हुआ-हुआ और क्या कहें, हमारी आत्मा की आत्मा होकर, एक अकल्पनीय एकता के साथ हमसे जुड़ा हुआ है। हमें संसार में जो कुछ प्रेम, आराम, वात्सल्य, भोग, सेवा, सुख मिल रहा है। वह किन्हीं इष्ट-मित्रों या प्राकृतिक वस्तुओं से नहीं मिल रहा है, वह सब हमारे उस एक अनन्य सम्बन्धी परम दयालु प्रभु से ही मिल रहा है। वह केवल हमें अपनी ओर खींच ही नहीं रहा है, अपितु अति समीपता से निरन्तर हमारी सेवा भी कर रहा है, प्रेम-प्रेरित होकर हमारी सेवा कर रहा है, हमारा पालन, पोषण, रक्षण, दुःखनिवारण आदि सब परिचर्या कर रहा है। अरे! वह तो कहीं छिपा हुआ भी नहीं है। उसके और हमारे बीच में कोई भी आवरण नहीं है। उसे ढका हुआ, आच्छादित भी कौन कहता है ?

हे मनुष्यों! सच बात तो यह है कि यदि हम उसके इस प्रेमाकर्षण को जानने लग जाएं-वे प्रभुदेव सदा प्रेम से हमें अपनी ओर खींच रहे हैं, यह हम सचमुच अनुभव करने लग जाएं, तो हमें यह भी दिख जाए कि वे हमारे अत्यन्त निकट हैं और अत्यन्त निकटता के साथ हमारी सेवा-शुश्रूषा कर रहे हैं और फिर एक दिन हमें यह भी दिख जाए कि वे सब ब्रह्मण्ड के रचयिता महापराक्रमी इन्द्र प्रभु जिनके विषय में परोक्षतया हम इतनी बातें सुना करते थे, वे हमसे किसी आवरण से ढके हुए भी नहीं हैं। वे प्रत्यक्ष हमारे सामने हैं और यह दिखा जाना ही परमात्मा का साक्षात्कार करना है, परम प्रभु को पा लेना है।

-वैदिक विनय से साभार

पंडित लेखराम शहीदी सम्मेलन

सभी आर्य प्रेमियों को सूचना देते हुए हर्ष हो रहा है कि हर वर्ष की भांति आर्य समाज के महान शहीद पंडित लेखराम जी का शहीदी सम्मेलन दिनांक 1 मार्च से 6 मार्च 2016 तक मनाया जा रहा है, उसमें आर्य जगत के विद्वान श्रद्धेय सुरेश शास्त्री जी यज्ञ के ब्रह्मा होंगे। 1 मार्च से 6 मार्च सुबह-शाम आप वेदों पर आधारित अपना प्रवचन देंगे। श्री गुलशन जी संगीत तथा सभा के महोपदेशक श्री विजय कुमार शास्त्री भी अपना प्रवचन रखेंगे। माननीय श्री सरदारी लाल जी उप-प्रधान सभा और दीना नगर मठ के आचार्य माननीय स्वामी सदानंद जी अध्यक्षता करेंगे। सभी से विनम्र प्रार्थना है कि अभी से इसमें शामिल होने के लिए अपना प्रोग्राम बना लें। आप सबका सहयोग अति आवश्यक है।

-रमेश भण्डारी, मंत्री लेखराम स्मारक कादियां

गुरूकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।